९५. अखण्डता सार्वभौमता-२

14-09-2013

अखण्डता त्योहारों के रूप में, समझदार मानव का आचरण के रूप में, स्वीकृति के रूप में स्पष्ट होता है | समझदारी सह-अस्तित्व में, सह अस्तित्व में जीवन ज्ञान, जीवन में विकास और प्रमाण ही विकसित चेतना के रूप में होना देखा गया है | इसी के आधार पर सम्पूर्ण आचरण कार्य व्यवहार संपादित होता है जिसके फल श्रुति में, परम्परा में संस्कार के रूप में शुरुआत होती है | परम्परा सन्तान के रूप में होता है | जन्म संस्कार एक कार्यक्रम है | मानव का कोख में आया हुआ संतान अभिभावक के साथ उसी अर्थ में जन्म उत्सव सम्पन्न होता है | जन्म दिवस में जन्म देने का प्रयोजन जागृति चेतना के रूप में गाना, बजाना, नृत्य करना, करने के रूप में होता है | इस क्रम में मानव का उद्देश्य स्पष्ट होता है | मानव मानवत्व के साथ जीना ही उद्देश्य है | मानवत्व के आधार पर जीने से आहार, विहार, व्यवहार स्पष्ट होता है | मानव को शाकाहार के रूप में गाया जाता है, जिया जाता है | इस क्रम में विहार को मानव चेतना के अर्थ में गाया जाता है | व्यवहार को आचरण और व्यवस्था के रूप में गाया जाता है | संतान में आशा करना इसी विधि से है | इस विधि से आशा करने के लिए स्वयं न्यायपूर्वक जीना बनता है | न्याय का स्वरूप सम्बंध, मूल्य, मूल्यांकन विधि से सम्पन्न होता है | इस क्रम में चलता हुआ परम्परा, मानव परम्परा कहलाता है | मानव परम्परा ही मानव चेतना का धारक-वाहक है | मानव चेतना ही पूर्ण विकसित होकर देव चेतना, देव चेतना का अंतिम विकास ही दिव्य चेतना के रूप में अनुभव ज्ञान सहित प्रमाणित होता है |

यही अनुभव मूलक विधि से तीनों चेतनाएं आवश्यकता अनुसार प्रमाणित होता है | यही परंपरा में प्रवाहित होता है | मानव ही इन चेतनाओं का धारक-वाहक होने का प्रयोजन समझ में आता है | परिवार के रूप में मानव चेतना का प्रमाण है | मानवता को उत्सव के रूप में परिणित करना, देव चेतना अपने-अपने अखण्ड समाज अर्थात समाज मानव को प्रमाणित करना, दिव्य चेतना में देव चेतना ही सार्वभौम व्यवस्था अर्थात विश्व मानव को प्रमाणित करना होता है | इस विधि से मानव ही विकसित चेतना का धारक वाहक होना समझ में आता है | इसी विधि से मानव विकसित चेतना का प्रमाण है | इसको अच्छी तरह से समझ सकते हैं हर व्यक्ति | किसी भी देश में हों, किसी भी काल में हों | इस क्रम में चलता हुआ मानव विकसित चेतना का परम्परा बनाता है | विकसित चेतना का परम्परा का आवश्यकता इसलिए है कि अखण्ड समाज ही सार्वभौम व्यवस्था का आधार है | सार्वभौमता तभी होता है जब अखण्ड समाज में जीते हैं नहीं तो सार्वभौम व्यवस्था आता ही नहीं | अखंड समाज तभी आता है जब समझदारी पूर्वक परिवार व्यवस्था में सार्वभौम ज्ञान सहित मानव जी लें | समझदारी का फल घाट चिंतन है | सार्वभौम वस्तु के अध्ययन एवं अभ्यास के बिना चिंतन होना संभव नहीं है | मनन के बिना चिंतन में प्रवेश नहीं होता | श्रवण के बिना मनन नहीं है | शास्त्राध्ययन के बिना श्रवण नहीं है | इस ढंग से इसकी श्रृंखला बनी हुई है | यह सब शिक्षा, अनुकरणीय वातावरण सहित सफल है |

अभी तक लाखों वर्ष इस धरती पर मानव जिया है | इसी में बुद्धिमान, इसी में मूर्ख, इसी में विज्ञानी माने गये हैं | ये सब होते हुएविकसित चेतना का पता नहीं लगा | विकसित चेतना ही जागृत चेतना है | जागृत चेतना ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना का संयुक्त रूप है | व्यवहार कार्यों में मानव चेतना को पहचाना जाता है;त्योहारों और सामाजिक कार्यों के

रूप में देव चेतना को पहचाना जाता है; दिव्य चेतना को व्यवस्था के रूप में पहचाना जाता है | यही अखण्डता, सार्वभौमता के रूप में है | इस प्रकार मानव चेतना, देव चेतना के अर्थ में; देव चेतना, दिव्य चेतना के अर्थ में; दिव्य चेतना, सह-अस्तित्व के रूप में; सह-अस्तित्व में ही ज्ञान-कर्म, व्यवहार,कार्य पूरा होता है | इस क्रम में मानव अपने आप में समाधान,समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व रूप में जीता है | मानवीयता का प्रदर्शन ही देव चेतना के रूप में होता है | इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए मानव जात अपने में आश्वस्त, विश्वस्त होकर जी पाता है | अभी तक मानव जो कुछ भी जिया है, सर्वाधिक मानव अपराध और भ्रम में ही जिया है | अपराध-मुक्ति और भ्रम-मुक्ति के लिये जिम्मेदार केवल शिक्षा विधि है | शिक्षा में अभी तक अभयतापूर्वक जीने, अपराध-मुक्त विधि से जीने, भ्रम-मुक्त रूप में जीने का कोई विधि तैयार नहीं हुआ |

कुछ सौ वर्षों से, कुछ हजार वर्षों से, कुछ लाख वर्षों से धरती पर मानव होने को मानते हैं | इतने समय से रहते हुए सार्थक रूप को पकड़ा नहीं, अनुसंधान किया नहीं, प्रयोजन निकला नहीं, कामना के रूप में अच्छा चाहते रहे | यहाँ तक मानव को पाया जाता है | अच्छा क्या है अभी तक तय नहीं कर पाया | इन सभी तथ्यों को शोध करने से लगता है कि शोध और अनुसंधान एक आवश्यकीय वस्तु है | तैयार किया हुआ चीज को शोधना, अनुसंधान करना, यही सार्थक प्रयास दिखता है | सार्थक प्रयास के आधार पर ही हम विकसित चेतना में जीने के योग्य होते हैं | विकसित चेतना में जीना ही अखण्डता, सार्वभौमता का प्रमाण है | अखण्डता, सार्वभौमता यदि प्रमाणित नहीं है, तब तक हम विकसित चेतना में जीते नहीं | चाहे कितना भी हल्ला कर लें, कितने भी विरोध कर लें | विरोध और हल्ला, व्यवस्था का आधार नहीं है | जागृति का रूप नहीं है | अभी तक जो कुछ भी किया, अपराध करने की बात हो न हो, अपराध मुक्ति कैसे होगा इसका व्यवस्था नहीं है |

इसीलिये अनुसंधान की आवश्यकता रही | अनुसंधान विधि से विकल्प आया | विकल्प विधि से अखण्डता समझ में आयी, जिसमें से चेतना विकास बनाम जागृति होना समझ में आया है जिसे हमने विकल्प नाम दिया है | इसको हर व्यक्ति शोध कर सकता है, स्वीकार सकता है | मानव चेतना विधि से ही मानव आहार, विहार, व्यवहार करता है | यह भी उत्सव के रूप में होना आवश्यक है | मानव शाकाहारी होना समझा है | इसे शोध करके स्वीकारना है | मांसाहार विधि से मानव हिंसा प्रवृत्ति से दूर हो नहीं सकता | हिंसा के बिना मांसाहार नहीं है | विकसित चेतना के आधार पर विहार,आहार के साथ व्यवहार पूर्वक तीन एषणा सहित मानव चेतना, लोकेषणा सहित देव चेतना, एषणामुक्त विधि से दिव्य चेतना रुपी विकसित चेतना होता है | यही अनुभव मूलक विधि से प्रमाण आता है | मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में जीने में ये तीनों अविभाज्य प्रमाण होते हैं |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)